thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 00 1/2012-14

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक :31
सृष्टि संवत् 1960853115
9 नवम्बर 2014
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 31, 6/9 नवम्बर 2014 तदनुसार 24 कार्तिक सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

स्तोता को धनाधिकारी बनाता है

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोतीयर्ति रेणुं मघवा समोहम्।
विभञ्जनुरशनिमाँइव द्यौरुत स्तोतारं मघवा वसौ धात्।।

-ऋ. 4/17/13

शब्दार्थ: मघवा=महान सामर्थ्यवान् त्वम्= एक क्षियन्तम्= नष्ट होते हुये को अक्षियन्तम्= नाश से रहित कृणोति = करता है अथवा क्षियन्तम् = बसते हुए को अक्षियन्तम्= बे-ठिकाना कर देता है अथवा अक्षियन्तम्= वे ठिकाने को क्षियन्तम्= बसने वाला, ठिकाने वाला कर देता है और रेणुम्=धूल को समोहम्=समुदाय, संघात रूप में इयर्त्ति= गति देता है, अथवा समोहम् = संघात को रेणुम्= धूलि के रूप में गति देता है। वह आशनिमान्+इव= विद्युद्वाले की भान्ति, व्रजधारी के समान विभञ्जनु:= विभाग करने वाला, तोड़ने--फोड़ने वाला और द्यौ: = प्रकाशमान् तथा प्रकाशाधार है, उत= और वह मघवा = ऐश्वर्यों का स्वामी, अन्तर्यामी स्तोतारम्= स्तुति करने वाले को वसौ= धन में धात्= धारण करता है।

व्याख्या= इस मंत्र में भगवान के प्रलयकारी स्वरूप का वर्णन किया गया है, किन्तु साथ ही आश्वासन भी दिया है कि धनदाता भी वही हैं-

स्तोतारं मघवा वसौ धात्- ईश्वर स्तोता को धन में धारण करता है।

धन देने की एक शर्त है-स्तोता होना। स्तोता= स्तुतिकर्त्ता। स्तुति का अर्थ लोग बहुत अन्यथा समझते हैं। लोग समझते हैं कि कुछ विशेष शब्दों या वाक्यों का उच्चारण करना स्तुति है, जैसे यह कहना कि परमेश्वर तू दयालु हैं, कृपालु हैं, सब सुखदाता है, जगद्विधाता है, चराचर का अधिष्ठाता है, इत्यादि परन्तु ऐसा है नहीं, स्तुति का वास्तविक अर्थ है- किसी वस्तु के गुण दोष जानकर, अपने गुणों से उसकी तुलना करके, अपने में जिन गुणों का अभाव है या तो कमी है उसकी पूर्ति की भावना का नाम स्तुति है, अर्थात इस ज्ञान से अपना चरित्र सुधारना ही यथार्थ स्तुति है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश सप्तम् समुल्लास में सगुण-निर्गुण, स्तुति का भेद बतला कर लिखा है-

इसका फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं, वैसे गुण कर्म, स्वभाव अपने भी करना। जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भांड के समान परमेश्वर का गुण-कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र को नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है, अर्थात् अपेक्षित गुण के कीर्तन के साथ तदनुगुण पुरुषार्थ भी करना स्तुति है। ऐसी स्तुति करने वाला जो जन मघवा की= सकलैश्वर्य-सम्पन्न प्रभु की स्तुति करता है, वह अवश्य धन पाता है क्योंकि वह प्रभु बहुत बड़ा दाता है। जैसा कि ऋग्वेद 4/17/8 में कहा- **दाता मघानि मघवा सुराधा:** उत्तम धन वाला, अर्थात् उत्तम रीति से आराधित हुआ मघवा=पूज्य धनी प्रभु पूज्य धन देता है। इसी कारण आस्तिक उसी से मांगते हैं-

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम।।

-ऋग्वेद 10/121/10

जिस अभिलाषा से तुझे पुकारें, वह हमारी पूरी हो, हम धनों के स्वामी हों। आराधना शर्त हैं, पुकारना शर्त है। देने में वह त्रुटि नहीं करता। क्योंकि वह क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोति-अमीर को गरीब और गरीब को अमीर कर देता है। वेद में ही कहा है

अयं वृतश्चातयते समीची आजिषु मघवा शृण्व एक:।
अयं वाजं भरति यं सनोत्य प्रियास: सख्ये स्याम।।

-ऋ.4/17/9

चुना जाकर यह भगवान उत्तम अवस्था का विस्तार करता है जो भगवान जीवन संग्राम में अकेला सहायक है, जिसको वह सम्भजन करता-चुनता है, वह अन्न, बल, ज्ञान धारण करता है, अत: इसकी मैत्री में हम इसके प्यारे=प्रेमी बनें, अर्थात् वह व्यर्थ ही धनी को दरिद्र या द्ररिद्र को धनी नहीं कर देता, गुण कर्म देख कर ही सब कुछ करता है। भगवान की स्तुति का कैसा सुन्दर फल है। इसको ऋग्वेद में अधिक स्पष्ट शब्दों में यों कहा है-

स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति।
अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्मन्नकिर्देवा वारयन्ते न मता:।।

-ऋग्वेद 4/17/19

स्तुत हुआ पूज्य परमेश्वर अकेला ही अनेक अप्रतिम बाधाओं का नाश कर देता है, क्योंकि स्तोता इसका प्यारा है। उससे होने वाले कल्याण को न देव=दैवी शक्तियां और न मनुष्य रोक सकते हैं, क्यों न इस महाबली की स्तुति करें।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

thearyasamaj.org

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

''अलब्धस्य लाभो योग:'' अप्राप्त वस्तु का लाभ योग है। योग शब्द का अर्थ है युक्त होना, अर्थात् अप्राप्त वस्तु से युक्त हो जाना और उस प्राप्त वस्तु की रक्षा क्षेम है-''लब्धस्य परिपालनं क्षेम:''। इन दोनों से युक्त होना योगक्षेम है, अर्थात् योगसहित क्षेम को ही योगक्षेम कहते हैं। वेद के राष्ट्रीय मन्त्र में इसका उद्घोष हैं, ''योगक्षेमो न: कल्पताम्'' हमारा योगक्षेम सिद्ध हो। बस, स्वाध्याय से उस योगक्षेम की सिद्धि होती है।

प्राण और प्रजनन-शक्ति से तृप्त करते हैं-

इससे आगे लिखा है कि ऋचा रूप पयादि की आहुतियों से तृप्त हुए देवता स्वाध्यायशील व्यक्ति को प्राण और रेतस् शक्ति से तृप्त करते हैं। प्राणन और प्रजनन-शक्तियां ही जीवन का आधार हैं। प्राणवान् और वीर्यवान् व्यक्ति ही जीवित हैं। वस्तुत: योग और क्षेम दोनों का आधार भी प्राण और वीर्य ही हैं। प्राण-शक्ति से ही अलब्ध का लाभ होता है और प्रजनन-शक्ति से लब्ध वस्तु का परिपालन सम्भव होता है। अत: देवता जहां योगक्षेम से तृप्त करते हैं, वहां वे प्राणी को प्राण और प्रजनन-शक्ति से भी तृप्त करते हैं।

सर्वात्मना तर्पयन्ति-

देवता स्वाध्यायशील व्यक्ति को जहां योगक्षेम से तृप्त करते हैं, जहां प्राण और वीर्य से सम्पन्न करते हैं, वहां सर्वात्मना तृप्त करते हैं। सर्वात्मना तृप्त होने का यही अर्थ है कि ऐसी तृप्ति, जिसके पश्चात् उसे कोई इच्छा नहीं रहती। वह अपने-आप से ही तृप्त होता है। उसे अपने-आप से तृप्ति होने लगती है। वह आत्मतृप्त होता है। उसे देवता, यक्ष आदि इन्द्रियों सहित सम्पूर्ण देह से युक्त कर देते हैं।

उसकी महिमा में पुन: कहा है कि समस्तपुण्यों से, समस्त ऐश्वर्यों से तृप्त करते हैं अर्थात् स्वाध्यायशील व्यक्ति पुण्यात्मा और सम्पत्तिमान् हो जाता है।

स्वाध्यायशील व्यक्ति की आहुतियों से देवता तो तृप्त होते ही हैं, पितर भी घृत और मधु की धाराओं से तृप्त होते हैं। देवता जहां ऋग्-यजुरूप घृत मधु से तृप्त होते हैं, वहां अपने यजमान के वानप्रस्थ पितर भी भौतिक घृत-मधु की धाराओं से तृप्त होते हैं। इस प्रकार शतपथकार ने स्वाध्याय महिमा का गान करते हुए अनेक मंगलों का वर्णन किया है। हम पहले सोलह लाभों की व्याख्या कर चुके हैं, उनमें योगक्षेम, प्राण, वीर्य, सर्वात्मलाभ, समस्त पुण्य, सम्पत्ति तथा पितरों की तृप्ति को सम्मिलित कर लिया जाए, तो मंगलों की यह संख्या चौबीस-पच्चीस तक पहुंच जाती है।

स्वाध्याय के वेदवर्णित लाभ-

हमने ऊपर शतपथ-ब्राह्मण के प्रमाण से स्वाध्याय के अनेक लाभों का उल्लेख किया है। उनका मूल स्रोत वेद ही है। स्वयं भगवान् निम्न० ऋचाओं में स्वाध्याय का फल उद्घोषित करते हैं-

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभि: संभृतं रसम्।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।

-ऋग्वेद ९।६७।३२

(य:) जो व्यक्ति (ऋषिभि:) अग्नि, वायु आदि ऋषियों द्वारा (संभृतम्) सम्यक् भरण की गई (रसम्) रसीली (पावमानी:) पवित्र ऋचाओं का वेद ज्ञान का (अधिएति) अधिकृत रूप से पारायण करता है। (और समय आने पर उनका प्रवचन भी करता है) (तस्मै) उस स्वाध्यायशील और प्रवचनकर्त्ता के लिए (सरस्वती) वेदरस से युक्त वाणी (क्षीरम्) क्षरणशील दुग्ध (सर्पि:) घृत (मधु) शहद (उदकम्) हर प्रकार के उत्तम पेयों को (दुहे) दुह देती है, परिपूर्ण कर देती है। भगवान् मनु ने इसी अनुभूति को इस प्रकार व्यक्त किया है-

य: स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियत: शुचि:।
तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु॥ -मनु० २।१०७

(य:) जो व्यक्ति (स्वाध्यायम्) वेदाध्ययनरूप स्वाध्याय को (विधिना) विधिसहित (नियत:) प्रयत्नपूर्वक नियत समय (प्रतिदिन) संयतात्मा होकर (शुचि:) अन्दर-बाहर से पवित्र होकर (अब्दम्) वर्ष भर (अधीते) अध्ययन करता है। (तस्य) उसको (स्वाध्यायशील व्यक्ति को) (एष:) यह अध्ययन (नित्यम्) प्रतिदिन (पय:) दूध (दधि) दही (घृतम्) घी और (मधु) शहद देता है।

ये तो सामान्य लाभ हैं, जिनका वर्णन वेद भगवान् ने किया है। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण वर्णन अथर्ववेद के उन्नीसवें काण्ड के इकहत्तरवें सूक्त के प्रथम मंत्र में मिलता है। जब परमात्मा आदि सृष्टि में जीवों के कल्याणार्थ ऋषियों की आत्मा में ज्ञान संभृत कर रहे थे, उस समय ज्ञान का उपसंहार करते हुए आदेशात्मक निम्न मंत्र प्रकाशित किया गया-

''स्तुता मया वरदा वेदमाता। प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयु: प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥''

-अथर्व० १९।७१।१

आदि सृष्टि में ऋषियों की आत्मा में ज्ञान संभृत कराते हुए (मया) मैंने ही जिसका (स्तुता अथवा प्रस्तुता) स्तवन अथवा प्रस्ताव किया है और जो (वेद-माता) समस्त ज्ञान की निर्मात्री, समस्त लाभों (विद्लृ लाभे) की निर्मात्री है, अत: (द्विजानाम्) द्विजनिर्मात्री भी है। न केवल द्विजनिर्मात्री है, अपितु (द्विजानां पावमानी) द्विजों को पवित्र करने वाली है। यह वेद माता (वरदा) वरों की देने वाली है, परन्तु उस माता का एक आदेश है कि (प्रचोदयन्ताम्) इसे सर्वत्र प्रेरित करो, प्रचारित करो। इससे तुम्हें निम्न वर अथवा मंगल मिलेंगे। (आयु:) दीर्घ जीवन, (प्राणम्) (उसका आधार) प्राणशक्ति, (प्रजाम्) प्रजनन-शक्ति और सन्तान्, (पशुम्) पशुधन, (कीर्तिम्) यश (द्रविणम्) धन और (ब्रह्मवर्चसम्) ब्रह्मवर्चस तेज। ये सात मंगल वे हैं जिनमें सभी लौकिक मंगलों का समावेश हो गया है। इसके अतिरिक्त पारलौकिक मंगल है, वह भी तुम्हारे लिए है, परन्तु उसके लिए शर्त यह है कि पहले इन सातों लौकिक मंगलों को मुझे दे दो (मह्यं दत्त्वा) मुझे देकर (ब्रह्मलोकम्) मोक्षधाम को (व्रजत) चले जाओ।

उक्त मंत्र से निम्नलिखित बातें प्रकाश में आई हैं-

कि भगवान् के द्वारा प्रस्तावित वेद का ही स्वाध्याय और प्रवचन करो, जो कि अपौरूषेय ज्ञान है, जिसके लिए भगवान् स्वयं कहते हैं-

मया स्तुता-

भगवान् कहते हैं कि आदि सृष्टि में ऋषियों की आत्मा में मैंने ही इस वेद का प्रस्ताव किया था, मैंने ही स्तवन किया था। यदि मैंने स्तवन न किया होता तो न वे ज्ञान संभृत कर पाते और न ज्ञान का संसार में विस्तार हो पाता। यह मेरे द्वारा ही प्रस्तुत किया हुआ ज्ञान है-मया (प्र) स्तुता।

वेदमाता-

मनुष्य के दो जन्म होते हैं-एक शारीरिक जन्म और दूसरा बौद्धिक जन्म। इन दो प्रकार के जन्मों के लिए दो ही प्रकार की माताओं की आवश्यकता है। एक तो साधारण माता जिससे शारीरिक रूप धारण किया जाता है और दूसरी वेदमाता जिससे दिव्य जन्म धारण किया जाता है। अत: उसके अनुरूप ही इस माता का नाम वेदमाता है, जिससे व्यक्ति द्वितीय जन्म धारण करता है। इसलिए कहा कि द्विजानां वेदमाता-द्विजों का निर्माण करने वाली वेदमाता होती है।

वरदा वेदमाता-

वेद शब्द का अर्थ जहां ज्ञान है, वहां एक अर्थ लाभ भी है। संसार में जितने लाभ हैं, उसकी भी यही निर्मात्री है, जहां ज्ञान-निर्मात्री है, वहां लाभ-निर्मात्री है। हर व्यक्ति लाभ का ही वरण करता है और प्रत्येक लाभ वह अपनी माता से ही मांगता है। इसलिए इस वेदमाता का एक विशेषण है वरदा-वरों को देने वाली, जो वर मांगो देती है। आवश्यक यह है कि हम उसके सच्चे पुत्र बनकर उससे मांगने जाएं और मां का आदेश पालन करें। उसका एकमात्र आदेश यही है कि इसको सर्वत्र प्रसारित करो (प्रचोदयन्ताम्)।

सात वर-

वेद ज्ञान का प्रचार और प्रसार करने से तुमको इहलोक और परलोक के सभी वर मिलेंगे। इहलोक के मंगलों का यदि विस्तार किया जाए, तो उन्हें तीन एषणाओं में बांटा जा सकता है-पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा। **(क्रमश:)**

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

अनुशासन, श्रम और नैतिकता से ही देश की प्रगति सम्भव

किसी भी देश के विकास और उन्नति के लिए जिन चीजों की आवश्यकता होती है, वे हैं अनुशासन, परिश्रम और नैतिक मूल्य। इन तीनों के बिना कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता और न ही इनके बिना चरित्र निर्माण हो सकता है। जिस भी राष्ट्र ने उन्नति की है उसने इन तीनों को अपनाया है। अनुशासन, परिश्रम और नैतिकता की आज देश को सबसे ज्यादा आवश्यकता है। देश का प्रत्येक व्यक्ति इन तीन गुणों को अपने जीवन के अन्दर अपना लें तो राष्ट्र उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है। इन तीनों के द्वारा व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है। इनके द्वारा ही उसके व्यक्तित्व का आकलन किया जाता है।

हमारे जीवन में सबसे प्रथम स्थान अनुशासन का है। आज तो ऐसा अनुभव होता है कि हमारे शब्दकोष से किसी ने अनुशासन शब्द ही निकाल लिया हो। किसी भी क्षेत्र में आज अनुशासन दिखाई नहीं देता। हर कोई अनुशासन की अवहेलना करता है। अपने पद के अहंकार के कारण वह किसी को भी अपने से बड़ा नहीं समझता। आज परिवार के अन्दर, समाज के अन्दर, राष्ट्र के अन्दर कहीं पर भी अनुशासन देखने को नहीं मिलता। शिक्षा के क्षेत्र में भी अगर देखें तो वहां भी अनुशासन देखने को नहीं मिलता। प्राचीन समय में गुरू का स्थान ऊंचा होता था और छात्रों के मन में उनका सच्चा सम्मान होता था। आज विद्यालयों, कॉलेजों में कहीं भी अनुशासन का पालन नहीं किया जाता, जहां पर विद्यार्थी का सबसे ज्यादा बौद्धिक विकास होता है। आज गुरू और शिष्य के बीच में वह सम्बन्ध नहीं दिखाई देता जो प्राचीन समय में होता था। आज के विद्यार्थी छोटी सी बात पर स्कूल, कॉलेज में हड़तालें शुरू कर देते हैं, अपने अध्यापकों का अपमान करते हैं। इसी अनुशासनहीनता के कारण आज के विद्यार्थी का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता। जिस आयु में उन्हें अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए, अपने चरित्र को संवारना चाहिए उस आयु को मौज मस्ती में बिता देते हैं। जिस राष्ट्र की युवा पीढ़ी अनुशासनहीनता का शिकार हो जाती है, उस राष्ट्र का भविष्य अन्धकारमय हो जाता है। युवा पीढ़ी राष्ट्र का भविष्य है। अत: माता-पिता और अध्यापकों को चाहिए कि वे मिलकर उनके चरित्र का निर्माण करें, उन्हें अनुशासन में रहना सिखाएं। इसके लिए माता-पिता और अध्यापकों का कर्त्तव्य बनता है कि वे भी स्वयं अनुशासन का पालन करें। आज समाज के सभी क्षेत्रों में अनुशासन की आवश्यकता है। सरकारी दफ्तरों में देख लीजिए कि कितने कर्मचारी समय पर आते हैं और कितने समय के अनुसार अपने कार्य को सही ढंग से करते है। आज संसद और विधानसभाओं में अनुशासन की अवहेलना के कारण बार-बार सदन की कार्यवाही स्थगित की जाती है। इस प्रकार अनुशासनहीनता के कारण राष्ट्र की हानि होती है। इसलिए अनुशासन का पालन करना प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है, चाहे वह कितने ही उच्च पद पर आसीन क्यों न हो।

जीवन में दूसरा स्थान परिश्रम का है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों से होती है। आज हमारे देश के सब कारखाने अपनी उत्पादक क्षमता के अनुसार काम करें तो राष्ट्र की उन्नति होने से कोई नहीं रोक सकता। देश का प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए यदि मेहनत और लग्न के साथ अपने कार्य को करें तभी देश तरक्की कर सकता है। हमारे पास किसी चीज की कोई कमी नहीं है। सभी प्रकार के साधन आज हमारे पास हैं। अगर हमारे पास किसी चीज की कमी है तो वह है परिश्रम। आज हर कोई अपने काम से जी चुराता है। परिश्रम करना, मेहनत करना अपना अपमान समझता है। जिस कार्य को अकेला मनुष्य कर सकता है आज उसकी जगह तीन-चार आदमी काम करते हैं परन्तु फिर भी परिणाम शून्य है। नीतिकार ने कहा है कि परिश्रमी व्यक्ति को लक्ष्मी सिंह के समान प्राप्त होती है। जो परिश्रम करने के बजाय भाग्य के भरोसे बैठते हैं, वे मनुष्य कायर होते हैं। मनुष्य इस संसार में किसी भी कार्य में सफलता बिना परिश्रम किए नहीं प्राप्त कर सकता। अगर कोई विद्यार्थी है तो वह विद्या प्राप्ति के लिए परिश्रम करें। देश का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्य करता है, उसमें पूरे परिश्रम के साथ कार्य करें। नेता, अफसर, कलर्क, कर्मचारी सभी अपने-अपने कार्य को पूर्ण पुरूषार्थ के साथ करें। जब प्रत्येक व्यक्ति देश की उन्नति में अपना योगदान देगा तभी राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। जर्मनी और जापान ने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इतनी प्रगति की है, उसका सबसे बड़ा कारण जर्मन और जापानी लोगों का परिश्रम है। देश की उन्नति के लिए परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है।

तीसरी आवश्यकता मनुष्य के लिए नैतिक मूल्यों की हैं। कोई भी देश ऊंचा नहीं बन सकता जिस देश के निवासी अपनी मर्यादाओं, आदर्शों और नैतिक मूल्यों का पालन नहीं करते। आज लोग राजनीतिक नेताओं पर क्यों विश्वास नहीं करते? उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बहुत से नेता लोग कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। नैतिक मूल्यों की अवहेलना के कारण आज भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, बलात्कार जैसी घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। आज देश अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। अपने स्वार्थ के लिए भाई-भाई के खून का प्यासा है। जिस देश के लोग अपने नैतिक मूल्यों का पालन नहीं करते, उस राष्ट्र का पतन हो जाता है। देश में बढ़ती बुराईयों का कारण नैतिक मूल्यों का पतन है। आज हम अपने महापुरूषों का आदर करते हैं, उनके लिए हमारे अन्दर श्रद्धा होती है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में श्रेष्ठ गुणों को धारण किया था। नैतिक मूल्यों के पतन के कारण किसी भी राष्ट्र की उन्नति की कल्पना करना सम्भव नहीं है।

अगर हम भी अपने देश को उन्नत व विकसित देखना चाहते हैं तो हमें भी अनुशासन, परिश्रम और नैतिकता का पालन करना होगा। देश का प्रत्येक निवासी अपने अन्दर अनुशासन, परिश्रम और नैतिकता की भावना को अपना लें तो राष्ट्र स्वयं विकसित हो जाता है। हम सभी का कर्त्तव्य बनता है कि हम भी अपना-अपना सुधार करके देश की उन्नति में भागीदार बनें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक

आर्य समाज जालन्धर छावनी में दीपावली पर्व एवं ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली का पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया गया जिसमें भारी संख्या में समाज के अधिकारी एवं सदस्य, स्कूल के अध्यापक और बच्चे शामिल हुए। प्रात: 9 बजे हवन यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा श्री नन्द दुलाल जी थे। मनु कपिल, विक्रम कपिल, हरेन्द्र गुप्ता सपरिवार, प्रिं. अरूणा तलवाड़, सन्तोष शर्मा इस अवसर पर यजमान बनें। स्कूल के बच्चों ने भी बड़ा रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री तिलक राज शास्त्री जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश ड़ाला और उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। मंच संचालन मंत्री श्री जवाहर लाल महाजन जी ने बड़े ही व्यवस्थित ढंग से किया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री धर्मेन्द्र अग्रवाल, मैनेजर श्री कृष्ण लाल गुप्ता, आर्य समाज के प्रधान श्री चन्द्र गुप्ता, अशोक शर्मा कोषाध्यक्ष, उपप्रधान श्री अशोक जावेद, अयोध्या प्रसाद, रघुनाथ ठाकुर, रघुवीर सिंह जादौन, स्त्री आर्य समाज जालनधर छावनी ने भी इस कार्यक्रम को सुशोभित किया।

-जवाहर लाल महाजन मन्त्री आर्य समाज

thearyasamaj.org

युग पुरुष महर्षि दयानन्द ने ही ईश्वर का सत्य स्वरूप बताया

ले० श्री उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून

ईश कृपा से मोक्ष से लौट कर सदियों बाद इस धरती पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म हुआ। उन्होंने वेदानुसार ईश्वर का सत्य स्वरूप व रचना को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया। महाभारत काल के बाद अठाहरवीं शताब्दी में इस महापुरुष ने जन्म लिया। आर्य समाज की स्थापना करके, उसके सार्वभौम दस नियम बताए, उसमें दूसरे नियम में ईश्वर का सत्य स्वरूप बतलाया गया है। आइए संक्षेप में विचार करते हैं-

आर्य समाज का दूसरा नियम-ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकाय-व्रणा, मश्नाविरं शुद्धमपाप-विद्धम कर्विमनीषी परिभू:

स्वयम्भूर्याथातथ्यतोथार्नव्यद-धाच्छा श्वतीभ्य: समाभ्य॥

-यजुर्वेद

ईश्वर सर्वव्यापक है, जगत् का उत्पादक है, शरीर रहित है, शारीरिक विकार रहित है, सूक्ष्मदर्शी है, नाड़ी और नस के बन्धन से रहित है, कवि है, ज्ञानी है, पाप से रहित है, स्वयम्भू है, अनादि है, प्रजा के लिए ठीक-ठीक कर्मफल का विधानकर्त्ता है। हमारे चारों ओर ऊपर-नीचे, आगे-पीछे विद्यमान है और सम्पूर्ण सृष्टि को नियमित चला रहा है। ग्रह उपग्रह सम्पूर्ण अन्तरिक्ष को संचालित कर रहा है तथा ऋतुओं का निर्माण प्राणी मात्र के हित के अनुसार करता है और प्राणों को जीवित रखने के लिए, वायु, अग्नि, जल, अन्न इत्यादि पदार्थ नि:स्वार्थ भाव से देता है।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्ये-वानुपश्यन्ति।

सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥

अर्थात् जो कोई सम्पूर्ण चराचर जगत को परमात्मा में ही देखता है, वह कभी भी निन्दित नहीं होता है और परमात्मा के नौ गुण सदा मन में रखता है। वह सदैव, शाश्वत सुख को प्राप्त होता है।

ईश्वर के नौ गुण-1. ईश्वर सर्वदेशी है। 2. ईश्वर एकत्व है। 3. ईश्वर शुक्रम है। 4. ईश्वर शुद्धम है। 5. ईश्वर अपापविद्धम है। 6. ईश्वर कवि है। 7. ईश्वर मनीषी है। 8. ईश्वर स्वयंभु है। 9. ईश्वर फलदाता है।

ईश्वर का स्वरूप-परमात्मा निराकार सच्चिदानन्द है। वह घट-घट, कण-कण में व्यापक है और अपमी महति शक्ति से सारे संसार का पालन संचालन स्थिति, उत्पत्ति कर रहा है।

ईश्वर की रचनाएं-ईश्वर ने सृष्टि की रचना अद्भुत की है और सूर्य, चन्द्रमा, तारे व सारे ब्रह्मण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है व स्थिर किये हुए हैं। देखिए-

सूर्य पृथ्वी से 9 करोड़ 30 लाख मील दूर है। चन्द्रमा पृथ्वी से 2 लाख चालीस हजार मील दूर है और निरन्तर बिना सहारे के अपनी धूरी पर घूमते रहते हैं, किन्तु आश्चर्य है कि दूरी घटती बढ़ती नहीं है।

चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा 17 दिन 7 घण्टे 56 मिनट और 12 सेकेन्ड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धूरी पर 23 घन्टे 56 मिनट और 9 सैकण्ड में घूमती है और प्रति सेकण्ड में 18 मील सूर्य की परिक्रमा करती है और अपनी धूरी पर 1036 मील प्रति घण्टा की रफ्तार से घूमती है।

सूर्य का व्यास-8 करोड़ 58 लाख 85 हजार मील है और प्रकाश की किरण पृथ्वी पर 8 मिनट में पहुंचती है।

सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है-जो अपनी धूरी पर 9 घण्टे 55 मिनट में घूमता है और 333 दिन में सूर्य की परिक्रमा करता है।

सूर्य जलता हुआ अग्नि का पिण्ड है। इसकी सतह का तापमान 12000 डिग्री सेन्टीग्रेट है और दूरी इतनी है कि तापमान सामान्य बना रहता है। अगर एक बाल के बराबर भी सूर्य पृथ्वी के नजदीक आ जाए तो पृथ्वी जलकर राख हो जाएगी और थोड़ी सी दूर हो जाए तो पृथ्वी बर्फ बन जाएगी। सूर्य की किरणें पृथ्वी पर सीधी पड़े तो जीना दूभर हो जाएगा। ईश्वर की व्यवस्थानुसार इसमें सुरक्षा किरणें ओज परत रहती हैं।

पृथ्वी का व्यास 700 मील है। पर्वतों की ऊंचाई 511 मील है। समुद्र की गहराई 9 मील है। 3/4 संसार में जल ही जल है। सृष्टि का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से कार्य कर रहे हैं। इसमें जरा सा भी व्यवधान आ जाए तो विराट ब्रह्मण्ड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जाएगा और एक कण के विस्फोट से अनन्त प्रकृति में आग लग सकती है।

सर्वाधिक चमकने वाले तारों की संख्या 20 है। इसमें व्याघ नाम का तारा सबसे सर्वाधिक दीप्तिमान है। सूर्य की तुलना में यह तारा 21 गुना अधिक है। सूर्य का तापमान 2310 डिग्री फारेनहाइट है और पृथ्वी का तापमान 110 डिग्री है।

पृथ्वी के ऊपर अयन मण्डल की पट्टियां हैं, जिन्हें आईलेग स्पीयर कहा जाता है। यदि यह पट्टियां न हो तो पृथ्वी जल कर राख हो जाए। यह सारी व्यवस्था ईश्वर ने की हुई है।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 1 वर्ष में पूर्ण करती है और उसकी गति प्रति घण्टा एक लाख नौ सौ निन्यानबे मील होती है। सूर्य और सौर मण्डल का व्यास 1 शंख 18 खरब किलोमीटर है। समूचे मण्डल को सम्भालना सूर्य काम है और सम्पूर्ण सौर मण्डल बिना टकराए सहायता करते हैं, समूचा ब्रह्मण्ड कितना बड़ा है, इसका रचियेता केवल ईश्वर है। ईश्वर के अनन्त गुणवाचक नाम हैं जैसे निराकार, गणपति, देव, लक्ष्मी, सरस्वती, निर्गुण, सगुण, ब्रह्म, सत्य आनन्द, यम-काल, शंकर, महादेव, शिव आदि अनन्त नाम हैं। सृष्टि प्रारम्भ में ये सारे नाम वेदों से लेकर देवी देवताओं के नाम रखे गए हैं।

संसार के सभी मत ईश्वर की रचनाओं को तो मानते हैं, किन्तु ईश्वर के स्वरूप को नहीं जानते। ईश्वर की जगह देवी देवताओं को ही ईश्वर मानते हैं और ईश्वर भक्ति से बहुत दूर हो जाते हैं।

केवल आर्य समाज ही ऐसा धार्मिक संगठन है जो सच्चे रूप में ईश्वर को मानता है। अन्त युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को शत-शत नमन करता हूं।

आर्य समाज मलेरकोटला में ऋषि निर्वाण तथा दीपावली का पावन पर्व मनाया गया

आर्य समाज मलेरकोटला में बड़ी श्रद्धा के साथ महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस तथा दीपावली का पावन पर्व मनाया गया। प्रात:काल सबसे पहले आर्य समाज के पुरोहित के ब्रह्मत्व में वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्रीमती सुनीता मैगन जी बनें। इस अवसर पर आर्य मॉडल स्कूल के सभी विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने भाग लिया और स्वाहा उच्चारण करते हुए यज्ञ अग्नि में आहुतियां प्रदान की। यज्ञ उपरान्त दयानिधि शास्त्री ने दीपावली पर्व व ऋषि निर्वाण दिवस के महत्त्व को विस्तारपूर्वक यज्ञ श्रद्धालुओं को समझाया। श्रीमती सुनीता मैगन ने भजन द्वारा ऋषि गुणों का बखान कर लोगों का मन मोह लिया। इस महान पर्व पर शहर के श्री रविन्द्र कुमार, बसाखा जानवी और प्रेम ने पधार कर आर्य समाज की शोभा बढ़ाई। अन्त में आर्य समाज के मंत्राणी श्रीमती सुनीता जी ने आए हुए मेहमानों को दीपावली की बधाई दी।

-पुरोहित आर्य समाज मलेरकोटला

thearyasamaj.org

ईश्वर के सच्चे अद्वितीय पुत्र और सन्देशवाहक वेदज्ञ और धर्मज्ञ महर्षि दयानन्द और हमारा संसार

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला देहरादून

ईश्वर ने यह सारा संसार जीवों के कल्याण के लिए और पूर्व जन्मों में उनके द्वारा किये गए शुभ व अशुभ कर्मों के फल प्रदान करने के लिए बनाया है। सभी मनुष्य अपना जीवन सत्य ज्ञान, कर्म व उपासना के द्वारा व्यतीत करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकें, इसके लिए उस दयालु परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नाम के चार ऋषियों के द्वारा अपना सत्य, कल्याणकारी व मनुष्य का परम हितकारी ज्ञान ''वेद'' दिया और उसे हम तक पहुंचाया है। हम ज्ञान को प्राप्त कर सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक व उसके बाद भी कुछ मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करते रहे हैं। महाभारत काल के बाद वेदों का ज्ञान विलुप्त हो गया जिससे सर्वत्र अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां, अनुचित कर्म काण्ड, यज्ञों में पशु हिंसा, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन से वंचित किया जाना, छुआछुत, जन्माधारित जाति प्रथा, आलस्य व प्रमाद आदि हानिकर मान्यताएं समाज में प्रविष्ट हो गईं। मानव जीवन का इतना अधिक पतन हुआ कि इसका वर्णन करना कठिन है। अज्ञान के कारण हमारे देश में व विदेशों में भी अनेकानेक मत-मतान्तर व पन्थ-सम्प्रदाय उत्पन्न हो गये जो स्वयं को ही सच्चा धर्म मानने लगे। उन्होंने अपने मत में निहित असत्य व अज्ञान पर विचार करना ही छोड़ दिया। आज भी यही स्थिति दिखाई देती है। इसके विपरीत यह भी देखा जा रहा है कि आज के मत-मतान्तरों में अपने असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों को छुपाने व उनका पोषण करने की प्रवृत्ति है और इसके लिए कुछ लोग सच्चे मानवों का खून बहाने के लिए भी तत्पर है। यह सिलसिला आज के वैज्ञानिक युग में भी बदस्तूर जारी है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म एक ब्राह्मण कुल में 12 फरवरी, 1825 को गुजरात के राजकोट जनपद के टंकारा नामक कस्बे में श्री करसन जी तिवारी के यहां हुआ। 14 वर्ष की आयु में पिता की प्रेरणा से उन्होंने शिवरात्रि का व्रतोपवास किया। रात्रि एक मन्दिर में जागरण करते हुए शिव की मूर्ति अर्थात् शिवलिंग पर चूहों की उछल-कूद देखकर उन्हें मूर्ति के साक्षात् ईश्वर व ईश्वरीय शक्ति सम्पन्न होने में सन्देह हुआ। पिता अपने किशोर पुत्र की शंकाओं का समाधान नहीं कर सके। कालान्तर में उनकी एक बहन और चाचा की मृत्यु हो गई। अब इन दो मौतों ने बालक व युवक मूलशंकर (स्वामी दयानन्द जी का बचपन का नाम) में वैराग्य की भावना को उत्पन्न कर दिया। वह सच्चे ईश्वर व मृत्यु से बचने के उपायों की खोज के लिए घर से भाग निकले और उस समय के साधु, सन्तों, योगियों, ज्ञानियों, धर्माचार्यों की संगति कर उनसे इनके उपाय पूछने लगे। अध्ययन में बाधा आने के कारण उन्होंने सन्यास लेकर स्वामी दयानन्द नाम पाया। उनकी खोज नवम्बर, सन् 1860 में मथुरा के दण्डी गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती की कुटिया में अध्ययनार्थ पहुंचने तक जारी थी। इस बीच उन्होंने देश का भ्रमण किया और उन्हें जो भी विद्वान, साधु, सन्त, ज्ञानी, यति, योगी, धर्म प्रचारक, महन्त आदि मिले, उनसे उपदेश व शंका-समाधान के साथ योग विद्या का अध्ययन व अभ्यास करते रहे। वह योग व ईश्वर की प्राप्ति में सफल भी हो गये थे परन्तु विद्याव्यसनी होने के कारण वह और अधिक ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक थे जिसने उन्हें मथुरा पहुंचा दिया। गुरू विरजानन्द जी के यहां लगभग 3 वर्ष रहकर उन्होंने व्याकरण एवं वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन समाप्त किया और गुरू की आज्ञा से वेद व धर्म प्रचार के क्षेत्र में पर्दापण किया। यह अदभुत संयोग है कि एक गुजराती जिज्ञासु दक्षिण भारतीय सन्यासी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से सन्यास लेता है और पंजाब के विद्वान गुरू दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती से वेद व आर्ष ज्ञान से परिपूर्ण होता है। देश भर में प्रचार करता है और राजस्थान में अपनी जीवन लीला समाप्त करता है और जगदगुरू के आसन पर विराजमान होता है। सारे विश्व के करोड़ों लोग उसके आज अनुयायी हैं। हम अनुभव करते हैं कि उनके समान विश्व का उपकार व कल्याण करने वाला अन्य कोई महापुरूष नहीं हुआ।

स्वामी दयानन्द ने देशी व विदेशी सभी मत-पन्थों के ग्रन्थों का अध्ययन किया और पाया कि सभी मतों में असत्य, अज्ञान, कुरीतियां, अन्धविश्वास, पाखण्ड, एक-दूसरे मत का विरोध आदि स्वभाव व व्यवहार विद्यमान है और इसके साथ सभी मत अपने अनुयायियों को उनके जीवन का सत्य व यथार्थ उद्देश्य व लक्ष्य व उसकी प्राप्ति के साधन बताने में असमर्थ हैं। उन्होंने सबसे पहले मूर्तिपूजा को लिया और इस पर धर्म और विद्या की नगरी काशी के 30 से अधिक शीर्षस्थ विद्वान पण्डितों से शास्त्रार्थ किया। मूर्ति पूजा वेदों से, युक्ति और प्रमाणों से सिद्ध न की जा सकी और आज तक भी नहीं की जा सकी है। इससे महर्षि दयानन्द देश और देशान्तर में भी प्रसिद्ध हो गये। अब उनका सारा समय उपदेश, प्रवचन, व्याख्यान, वार्तालाप, शंका समाधान, भेंट-वार्ता, शास्त्रार्थ व ग्रन्थ लेखन के साथ देश भर व राजे-रजवाड़ों में घूम-घूम कर प्रचार व जन-सम्पर्क में व्यतीत होने लगा। उन्होंने सत्य धर्म व मत के निर्णयार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसा कालजयी ग्रन्थ लिखा जिसकी तुलना में संसार में कोई दूसरा ग्रन्थ आज तक भी नहीं लिखा गया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद व यजुर्वेद का भाष्य, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरूणानिधि आदि अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ लिखें। उन्होंने तर्क, प्रमाणों, युक्तियों, विवेचना, समीक्षाओं, उद्धरणों से सभी मतों व उनके धर्म ग्रन्थों की समीक्षा कर पाया कि पूर्ण सत्य केवल और केवल वेदों में ही विद्यमान है। यह वेद ईश्वर प्रणीत ग्रन्थ हैं जिनका सृष्टि की आदि में ईश्वर द्वारा प्रकाश किया गया था। उन्होंने वेदों को स्वतः प्रमाण पाया और सबको बताया तथा अन्य सभी ग्रन्थों को स्वतः प्रमाण बताया यदि वह वेदानुकूल हों। इस प्रकार से संसार को सत्य धर्म का ज्ञान हुआ और वह ''सत्य-धर्म का ज्ञान'' सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों सहित वेद व वेदानुकूल ग्रन्थ मनुस्मृति, 11 उपनिषद, 6 दर्शन आदि के रूप में आज भी हमें प्राप्त है। महर्षि दयानन्द ने यह कार्य करके ईश्वर का सच्चा, महान, अद्वितीय, युगपुरूष होने के साथ ईश्वर का सच्चा सन्देशवाहक होने का प्रमाण दिया। हमारे अध्ययन के अनुसार महाभारत काल के बाद सारी दुनियां में उनके समान कोई वेदज्ञ, धर्मज्ञ, योगी, समाज सुधारक व सामाजिक नेता, राजधर्म वेत्ता, ज्ञान-विज्ञानविद् महापुरूष दूसरा कहीं कोई नहीं हुआ है। महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह सर्वगुण सम्पन्न अद्वितीय पूर्ण पुरूष थे। यद्यपि आज भी उन जैसे महापुरूषों की देश व विश्व को आवश्यकता है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वह ''भूतो न भविष्यति'' की उपमा वाले अपनी तरह के एक ही पुरूष संसार के इतिहास में हुए हैं।

आज संसार में अनेक मत-मतान्तर हैं। सबकी मान्यतायें कुछ समान व कुछ असमान व परस्पर विरूद्ध भी हैं। हमें सभी मतों में एक कमी दृष्टिगोचर होती है कि सभी मतानुयायी अपनी-अपनी धर्म पुस्तकों को ही पढ़ते हैं, अन्य मतों व धर्मों की पुस्तकों को नहीं पढ़ते। हमारा मानना है कि सभी मनुष्यों को सभी मतों की पुस्तकों को निष्पक्ष भाव से पढ़ना चाहिये और सत्य जहां भी है, उसको स्वीकार करना चाहिये। इसके साथ उन्हें प्रेम पूर्वक सत्य धर्म का प्रचार भी सर्वत्र करना चाहिये और सदेच्छापूर्वक प्रचार करने वाले सच्चे धर्म प्रचारकों को सहयोग देना चाहिये। आज का युग विज्ञान का युग है जिसमें हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिये। यदि कोई ऐसा करता है तो वह अपने धर्म की दुर्बलता को प्रकट करता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

कुछ उपनिषदों से (बृहदारणयक उपनिषद्)

स्व० डा. सुशील वर्मा गली मास्टर मूल चंद वर्मा फाजिलका

पिछले अंकों में हमने देवता एवं आत्मा के सम्बन्ध में उपनिषद् के माध्यम से ज्ञान अर्जित किया। इसी उपनिषद् में परमात्मा के नाम अपनी प्रजा के प्रति उपदेश, प्रजापति एवं सत्य ब्रह्म के विषय में विस्तृत ज्ञान दिया गया है। इन्हीं सन्दर्भों में एक-एक विषय पर चिन्तन करते हैं।

परमात्मा के नाम-सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने परमात्मा के सौ नाम अंकित किए हैं और वे कहते हैं ''ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं, परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं, क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण कर्म स्वभाव हैं, वैसे ही उसके अनन्त नाम हैं। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने बिन्दुवत हैं।''

उपनिषद कहता है-

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

ओ३म् खं ब्रहम खं पुराणं वायुरंखंमिति।

वह ब्रह्म पूर्ण हैं, यह जगत भी पूर्ण है, पूर्ण ब्रह्म से ही यह पूर्ण जगत उदित होता है। पूर्ण ही से पूर्णता लेकर जब यह जगत बन चुका होता है, तब भी वह ब्रह्म पूर्ण का पूर्ण बचा रहता है।

इस श्लोक के आगे के भाग में कहा गया है कि ब्रह्म को तीन नामों से स्मरण किया जाता है।

ओ३म्-खं-ब्रह्म ओ३म् तो परमात्मा का प्रसिद्ध निज नाम है परन्तु कौरवयायणी पुत्र के अनुसार वायु वाले आकाश ही 'खम्' है। कई ब्राह्मणों अर्थात् विद्वानों का मत है कि वेद का नाम 'ख' है। खं ब्रह्म का पुरातन नाम है। खं का अर्थ आकाश करे तो इसका अभिप्राय आकाश की भान्ति व्यापक पर ब्रहम से है। खं का अर्थ 'वेद' करें तो उसका अभिप्राय भी उसी ज्ञान के भण्डार ब्रह्म से है। हर अवस्था में खं का अर्थ ब्रह्म ही है।

यजुर्वेद के 40वें अध्याय के अन्तिम मन्त्र में इसे खं नाम ही से पुकार जाता है।

''ओ३म् हिरण्मयेन पात्रेन..... ओं खं ब्रह्म'' -यजु 40/17

यहां पर ओ३म् एवं और ब्रह्म तीनों ही नाम उस परम पिता परमात्मा के हैं।

'द' का अर्थ-इसी उपनिषद् के पंचम अध्याय के दूसरे ब्राह्मण में तीन श्लोकों में 'द' के अर्थ का वर्णन है।

क्योंकि वह परम पिता परमात्मा हम सब प्राणी मात्र का पिता है और सभी उसकी सन्तति है।

तीनों सन्तानें देव, मनुष्य व असुर! सभी उस परमेश्वर से उपदेश लेने के लिए प्रजापति के पास गए। उस परमेश्वर ने आदेश दिया है कि पहले तुम सभी ब्रह्मचर्य पूर्वक वास करो तभी मैं तुम्हें उपदेश दे पाऊंगा। निश्चित अवधि तक ब्रह्मचर्य का वास पूरा करने के बाद देवों ने परमपिता प्रजापति से प्रार्थना की कि हे प्रजापति आप हमें उपदेश दीजिए। प्रजापति ने देवों को 'द' अक्षर का उपदेश दिया और कहा कि आप समझ गए मैंने क्या उपदेश दिया ? देवों ने कहा हां। आपने हमें 'दाम्यत' अर्थात् इन्द्रियों का दमन करने का उपदेश दिया। प्रजापति ने कहा कि तुम ठीक समझ गए हो-देवों को इन्द्रिय का दमन करना चाहिए।

जब प्रजापति के पास मनुष्य पहुंचे और उन्होंने भी उपदेश प्राप्ति की इच्छा की। प्रजापति ने उन्हें भी 'द' अक्षर का ही उपदेश दिया। उनसे भी पूछा कि आप सब समझ गए हो ? मनुष्यों ने कहा हां, हम सब समझ गए हैं। आप ने यही उपदेश दिया कि 'दत्त' दान करो। प्रजापति ने कहा कि तुम ठीक समझ गए हो कि मनुष्यों को दान देना चाहिए।

अन्त में असुर पहुंचे। उन्होंने भी उपदेश प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। उनकी प्रार्थना पर प्रजापति ने उन्हें भी 'द' का उपदेश दिया। प्रजापति ने उन्हें जाते हुए पूछा कि क्या तुम समझ गए हो, मैंने क्या उपदेश दिया ? असुरों ने कहा हां हम समझ गए हैं। आपने 'दयध्वम्' अर्थात् 'दया करो' का आदेश दिया है। प्रजापति ने कहा तुम ठीक समझे, दानवों की सभी पर दया करनी चाहिए।

यही प्रजापति का आदेश मानों विद्युत की कड़क में द-द-द का उच्चारण करके मानो दैवी वाणी अनुवाद कर रही हैं। विद्युत संसार में कड़क-कड़क कर रही है- ''दाम्यत् दत्त दयध्यवम्'' इन्द्रियों का दमन करो, सांसारिक वस्तुओं का संग्रह न करते हुए दान करो और प्राणी मात्र पर दया करो। इन तीनों की शिक्षा दमन, दान, दया है।

-''त्रयं शिक्षेत दमं दानं दयामीति''

संसार की पूर्ण शिक्षा इन्हीं तीनों में समाहित हो जाती है। क्योंकि देवों की कमज़ोरी इन्द्रियों की शिथिलता में मनुष्य की कमजोरी दान देने में और असुरों की कमजोरी दया न करने की है। यदि देव इन्द्रियों का दमन कर ले तो देवत्व की सार्थकता है। मनुष्य दान दे तो वह देवत्व पद को प्राप्त होगा और दानव अर्थात असुर दया का मूलमंत्र सीख जाएं तो वे असुर नहीं मानव तथा देवत्व पद को प्राप्त होंगे। यही आरोह की प्रतिष्ठा है, उन्नति के मार्ग की सीढ़ियां। दानव से मानव और मानव से दानव की प्राप्ति। दानव यदि दया करें तो मानव, मानव यदि दान करें तो देवत्व का पद और देवता यदि इन्द्रियों का दमन करते रहे तभी देवत्व पद की प्रतिष्ठा रहेगी। इसके विपरीत की अवस्था इन्हें अवरोह की ओर ले जाएगी। यही जीवन की सार्थकता है यही जीवन का सार है और यही जीवन का उद्देश्य। (क्रमशः)

पृष्ठ 5 का शेष-ईश्वर के शेष.....

किसी भी मत के अनुयायी की हठधर्मिता, स्वभाव व व्यवहार में कठोरता, हिंसात्मक प्रवृत्ति, असहयोगात्मक व्यवहार व प्रवृत्ति, रूढ़िवादी विचार व अन्य मतों का पूर्वाग्रह से मुक्त होकर अध्ययन न करना उसके मत की दुर्बलता को प्रकट करता है। सभी मतों का अध्ययन करने पर यह सिद्ध होता है कि इस पूरे ब्रह्माण्ड में केवल एक ही ईश्वर है। इस ईश्वर को अपने कार्यों से प्रसन्न करना ही मनुष्य का धर्म है। वह कैसे प्रसन्न होता है? इसका उत्तर है कि वह सच्ची ईश्वरोपासना, यज्ञ-अग्निहोत्र, पितृयज्ञ-अतिथियज्ञ-बलिवैश्वदेवयज्ञ, सेवा, परोपकार, सब प्राणियों के पति मित्र की दृष्टि रखना, दुःखियों का दुःख हरण करना, निर्बलों की रक्षा करना, स्त्रियों का सम्मान करना, निर्लोभी होना, काम व क्रोध पर विजय पाना आदि जैसे गुण ही धर्म है और इन्हीं से ईश्वर प्रसन्न होता है। इसके विपरीत जो कार्य व व्यवहार हैं वह पन्थ व मजहब आदि हो सकते है, धर्म कदोपि नहीं। आज के युग में यही सबसे बड़ा सन्देश हो सकता है कि सभी लोग असत्य का त्याग कर सत्य को अपनाये। इसके साथ हमें अपने जीवन का लक्ष्य भी निर्धारित करना है और उसे प्राप्त करने के साधनों का भी पता लगाना है। दर्शनों में इस विषय पर विस्तार से विचार हुआ है। उनके अनुसार असत्य को छोड़कर सत्य को अपनाना, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करना, ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानना व उसको ध्यान व चिन्तन द्वारा उपासना से प्राप्त करना अर्थात् उसका साक्षात्कार करना ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य सिद्ध हुआ है। ऐसा होने पर ही मनुष्य के सभी प्रकार के दुःखों की निवृति होती है। काम-क्रोध व लोभ से रहित व पूर्ण ज्ञानी होकर सभी प्राणियों की अधिकाधिक सेवा करना आदि ही वह साधन हैं जिनसे मनुष्य जन्म-मरण रूपी दुःख से छूट कर मुक्ति वा मोक्ष को पाता है। इन सब विषयों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द के समग्र साहित्य सहित वेद, वैदिक साहित्य को पढ़ाना अनिवार्य है। बिना इनके अध्ययन से जीवन को यथार्थ रूप में जाना नहीं जा सकता और न ही मानव जीवन सफल हो सकता है।

निष्कर्ष रूप में हम यही कह सकते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ही संसार में एकमात्र सच्चे ईश्वर पुत्र का ईश्वर दूत तथा सच्चे सन्देश वाहक थे। उनके ग्रन्थों का अध्ययन करके ही हम व संसार के लोग अपने जीवनों को सफल कर सकते हैं।

thearyasamaj.org

आर्य समाज तलवाड़ा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज तलवाड़ा का वार्षिकोत्सव दिनांक 24-10-2014 से 26-10-2014 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री, श्री नारायण सिंह एवं भजनोपदेशक श्री अरूण वेदालंकार जी उपस्थित हुए। प्रात:काल के समय में हवन यज्ञ और रात्रिकालीन समय में भजन और प्रवचन हुए। श्री अरूण कुमार जी के बहुत सुन्दर भजन तथा श्री विजय कुमार शास्त्री तथा श्री नारायण सिंह जी के बहुत ही सारगर्भित प्रवचन हुए। वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर प्रात: 8:30 बजे हवन यज्ञ प्रारम्भ किया गया। श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने वेद मन्त्रों की व्याख्या सहित हवन यज्ञ कराया तथा यजमानों को आशीर्वाद दिया। आशीर्वाद के समय स्वामी सदानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर भी उत्सव में पधारे और यजमानों को आशीर्वाद दिया। प्रात:राश करने के पश्चात श्री अरूण कुमार जी तथा श्रीमती कृष्णा देवी जी के बहुत सुन्दर भजन हुए तथा श्री नारायण सिंह तथा श्री विजय कुमार शास्त्री के उपदेश हुए। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी ने बहुत ही ज्ञानवर्धक विचार दिए। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर चलता रहा।

-परमानन्द आर्य पुरोहित आर्य समाज

आर्य समाज टैगोर नगर सिविल लाईनज लुधियाना में गायत्री महायज्ञ व वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज टैगोर सिविल लाईन लुधियाना का वार्षिक उत्सव 19 अक्तूबर रविवार 2014 को आर्य समाज के विद्वान प्रधान कविराज वैद्य वैणी प्रसाद शास्त्री जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम 4 हवन कुण्डीय यज्ञ किया जिसकी अग्नि श्री अनिल सिंघानिया, श्री वेद प्रकाश आर्य जी, अशोक गुप्ता ने सम्मिलित रूप से प्रज्वलित की, साथ में श्री प्रवीन गोयल, श्री प्रो. ओ. पी. खरबन्दा, श्री रणवीर पाहवा, श्री सर्वमित्र आर्य, श्री अविनाश पाहवा, श्री वेद प्रकाश भण्डारी, श्री अरुण भारद्वाज व अन्य बहुत सारे परिवार यजमान बनें। यज्ञ ब्रह्म पंडित सुरेन्द्र शास्त्री जी ने बहुत ही विस्तार से बीच-बीच में यज्ञ महत्त्व को बताया और कहा कि यज्ञ ही संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। साथ में पंडित राजेन्द्र जी आर्य ने यज्ञ करवाने में सहयोग किया, यज्ञ के पश्चात् चण्डीगढ़ से पधारी कुमारी नम्रता जी सोनी के मधुर भजनों ने सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्री शशि औल जी ने बहुत सुन्दर भजन सुनाया, मैली चादर ओढ़ के कैसे दर तुम्हारे आऊं। समारोह के मुख्य वक्ता नूरपुर कांगड़ा से पधारे स्वामी वेद प्रकाश जी सरस्वती ने अपना ओजस्वी उपदेश दिया और कहा कि वेद मार्ग पर चलते हुए जीवन के लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। यह सारा कार्यक्रम कृष्णा पार्क टैगोर नगर के खुले मैदान में किया गया। इस अवसर शहर के गणमान्य महानुभाव आर्य समाजों के अधिकारी, ज़िला सभा के मन्त्री, जवाहर नगर आर्य समाज के प्रधान श्री विजय सरीन, श्री सतपाल नारंग, श्री जगदीश नारग, श्री आत्म प्रकाश आर्य आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान श्री महेन्द्र पाल, श्री महेन्द्र पाल बस्सी, श्री रणवीर पाहवा, श्री इन्द्रवीर मल्हौत्रा, श्री सतवीर शर्मा, श्री प्रदीप पाहवा, डा. विश्वजीत शर्मा, श्रीमती शुभ भण्डारी, श्रीमती रेनु बधवा, श्रीमती कविता पाहवा, श्री वीरेन्द्र शर्मा, श्री रमाकान्त महाजन, श्री रजत सरीन, श्री युगवीर सूद, श्री पंडित भरत सिंह जी आर्य, श्री हर्ष जी सूद सभी परिवार सहित उत्सव में पधारे। आर्य समाज सिविल लाईनज़ की ओर से सभी को पांच वेद मन्त्र अर्थ सहित प्रात: सायं पाठ करने के लिए भेंट स्वरूप दिये, फलों का प्रसाद एडवोकेट गौतम भल्ला जी ओर से था। मन्त्री शास्त्री जी ने सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर प्रीतिभोज किया।

-भवदीय महेन्द्रपाल वस्सी, कोषाध्यक्ष

युवा चरित्र निर्माण एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न

वैदिक धर्म की रक्षा में अहर्निश सेवारत गुरूकुल आश्रम आमसेना के प्रांगण में 7 अक्तूबर 2014 को विजयादशमी के अवसर पर युवा चरित्र निर्माण एवं आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस शिविर का शुभारम्भ 2 अक्तूबर को नुआपड़ा ज़िले के यशस्वी विधायक श्री बसंत भाई पाण्डा के करकमलों से ओ३म् धव्जोत्तोलन द्वारा हुआ। इस शिविर में छत्तीसगढ़, ओड़िशा से 200 आर्यवीरों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर में उन्हें आत्मरक्षा के उपायों के साथ-साथ चरित्र निर्माण का भी प्रशिक्षण दिया। शिविर का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचार मंत्री श्री चन्द्रदेव जी तथा आचार्य मुकेश जी ने दिया।

षड् दिवसीय इस शिविर में अनेक आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर शराब, मांस, नशा सेवन से दूर होकर आजीवन देश, धर्म की रक्षा करने का संकल्प लिया। शिविर में गुरूकुल आश्रम आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती, उपाचार्य डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी, वा. विशिकेशन जी शास्त्री, आचार्य रणजीत जी 'विवित्सु', आ. मनुदेव वाग्मी तथा विश्वामित्र जी 'मुमुक्षु' का भी विशेष सहयोग रहा। शिविर के आयोजन की सारी व्यवस्था गुरूकुल की ओर से की गई।

समापन समारोह 7 अक्तूबर को गुरूकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक और संचालक स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर शरच्चन्द्र जी शरत् (उपजिलापात, नुआपड़ा), श्री राजूभाई धोलकिया (पूर्व विधायक, नुआपड़ा), सीआरपीएफ कमाण्डर श्री प्रधान जी, श्री सुरेश अग्रवाल जी, डॉ. केवलचन्द्र जी साहू आदि अनेक आर्य सज्जनों उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी तथा आनन्द कुमार जी शास्त्री ने किया। पुरस्कार वितरण उपरान्त मध्यान्ह 2 बजे शान्ति पाठ पूर्वक यह कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

-डा. कुञ्जदेव मनीषी

आर्य समाज मेन बाजार दीनानगर में ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया

आर्य समाज मेन बाजार दीनानगर में ऋषि निर्वाणोत्सव एवं स्वामी सर्वानन्द निर्वाणोत्सव 17-10-2014 से 22-10-2014 में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 17-10-2014 को शोभा यात्रा श्री काका शाह अबरोल, श्री रामफल आर्य, स्वामी सदानन्द, स्वामी संतोषानन्द, जी की अगुवाई में दशहरा ग्राऊंड से हवन यज्ञ के पश्चात नगर के मुख्य बाजारों से होती हुई डी. जी. खान पर समाप्त हुई जिसमें आर्य सी. सै. स्कूल दीनानगर, स्वामी शंकरानन्द स्कूल, सुमित्रा देवी स्कूल, दयानन्द इन्टरनैशनल स्कूल घरोटा, एस.एस.एम. कॉलेज और बी.एड. कॉलेज के प्रिं. स्टाफ एवं बच्चों ने भाग लिया। प्रतिदिन हवन यज्ञ एवं भजन प्रवचन होते रहे। श्री पवन शास्त्री, श्री जितेन्द्र शास्त्री दयानन्द मठ दीनानगर और श्री अरूण वेदालंकार भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने भजनों के द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्री रामफल जी आर्य ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश ड़ाला। आर्य समाज के प्रधान श्री धर्मेदु गुप्ता जी की अध्यक्षता में भजन गायन प्रतियोगिता कराई गई। इस प्रतियोगिता में 10 स्कूलों ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर स्त्री सम्मेलन, वेद सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आर्य युवा सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डा. सुभाष महाजन, डा. राजन अरोड़ा, प्रि. निर्मल पांधी, प्रिं. आर.के.तुली, प्रिं. अजमेर सिंह. प्रि. उपमा महाजन, प्रिं. ज्योति त्रिखा, अमीषा साहनी, प्रेम भारत, मनोरंजन ओहरी, रणजीत शर्मा, भारतेन्दु ओहरी, सरदारी लाल, मुनि लाल जी, बाल कुष्ण, राजेश महाजन, रघुनाथ शास्त्री, दिनेश शास्त्री, प्रिं. गन्धर्व राज महाजन, राधेश्याम महाजन, रूप चन्द शर्मा, एवं नगर के बहुत से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मंच का संचालन महामन्त्री योगेन्द्र पाल गुप्ता ने किया। आर्य समाज के प्रधान श्री धर्मेन्दु गुप्ता जी ने सभी आर्य बन्धुओं का धन्यवाद किया।

-योगेन्द्र पाल गुप्ता महामन्त्री आर्य समाज

hearyasamaj.org

वेदवाणी

प्राणों से प्यारे! हमारे सदैव कल्याण करो

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः॥

-ऋ० १।१।६

विनय-हे प्रकाशमय देव! यह सच है कि स्वार्थ त्यागी का कल्याण ही होता है, परन्तु संसार में ऐसा दिखाई नहीं देता। संसार में तो दिखता है कि स्वार्थमग्न लोग ही आनन्द-मौज उड़ा रहे हैं और स्वार्थ त्यागी दुःख भोग रहे हैं। स्वार्थी विजय पर विजय पा रहे हैं, दूसरों पर अत्याचार कर रहे हैं और स्वार्थ त्यागी पुरूष सताए जा रहे हैं, परन्तु हे मेरे प्यारे देव! हे मेरे जीवनसार! आज मैं तेरी परम कृपा से सूर्य की भांति यह स्पष्ट देख रहा हूं कि आत्म-बलिदान करने वाले का तो सदा कल्याण ही होता है। इसमें कुछ संशय नहीं रहा, यह अटल है, बिल्कुल स्पष्ट है। संसार की ये प्रतिदिन की उल्टी दिखाई देने वाली घटनाएं भी आज मेरी खुली आंखों के सामने से इस प्रकाशमान सत्य को छिपा नहीं सकतीं कि आत्म समर्पण करने वाले के लिए कल्याण ही कल्याण है। मैं देखता हूं कि संसार में चाहे कभी सूर्य टल जाए, ऋतुएं बदल जाएं, पृथ्वी उल्टी घूमने लग जाए और सब असम्भव सम्भव हो जाए, परन्तु तेरा यह सत्य अटल है कि आत्म-बलिदान करने वाले का अकल्याण कभी नहीं हो सकता- **"नहि कल्याणकृत कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति"** ("हे प्यारे! कल्याण करने वाला कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होता।") कृष्ण भगवान् के गाए हुए ये सान्त्वनामय शब्द परम सच्चे हैं।

हे जीवन-के जीवन! जब मनुष्य स्वार्थ को त्यागता है, आत्म-बलिदान करता है तो उस त्याग व बलिदान द्वारा हे कल्याणस्वरूप! वह केवल तेरे और अपने बीच की रूकावट का ही त्याग करता है, निवारण करता है और तेरे कल्याण स्वरूप को पाता है। भला, आत्म-बलिदान में अकल्याण का अवकाश ही कहाँ है ? सचमुच, स्वार्थशून्य पवित्र पुरुषों पर आए हुए कष्ट, दुःख, आपात् सब क्षणिक होते हैं। उनके सम्बन्ध में जो अक्षणिक हैं, सत्य हैं, अटल है, वह तो उनका कल्याण है।

साभार-वैदिक विनय

मोगा में ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज मोगा में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस दिनांक 23 अक्तूबर को प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक मनाया गया जिसमें बृहदयज्ञ किया गया। अनन्तर आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों द्वारा ऋषि के ज्ञानवर्द्धक प्रेरक तथा अनुकरणीय जीवन पर प्रकाश डाला गया। बच्चों ने भक्ति पूर्ण समूहगान प्रस्तुत कर कार्यक्रम को श्रद्धामय बनाया। इसमें आर्य माडल हाई स्कूल, आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकंडरी स्कूल, एम. डी. ए. एस. माडल स्कूल, डी. एन. माडल सी. सै. स्कूल, डी. एम. कालेज, डी. एम. कालेजिएट सी. सै. स्कूल एवं डी. एम. कालेज आफ एजुकेशन के विद्यार्थियों ने भाषण एवं समूह गान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के सभापति श्री सत्य प्रकाश जी उप्पल प्रधान, आर्य समाज मोगा रहे। उन्होंने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रेरक जीवन को नमन किया एवं इसे अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। अंश लेने वाले सभी बच्चों को उपहार देकर उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

इस अवसर पर भारी संख्या में विद्यार्थीगण, अध्यापकवृन्द एवं आर्य सदस्यगण उपस्थित रहे।

-दिवाकर भारती आर्य (पुरोहित)

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।